

आनापूर्वी

प्रकाशक

जिन वाणी सेवक उम्मेदसिंह

मुमदीलाल सिंघल जैन

ठि० कटड़ा जल्लावालिया

मु० अमृतसर पंजाब

मुल्यसदुपयोग

श्रीवीर निर्वाणसंम्बत २४४८त्रि०सं० १९७९

भाद्रपदमास अगस्त १९२२ (प्रति १०००००००००)

पञ्जाब एकोनामोकल प्रेस, लाहौर ।

वीर सेवा मन्दिर दिल्ली



कमल शर्मा

बाल न.

सुशान्त

(१)

नवेदन ।

सर्व भाई वा बहनासे सविनयपूर्वक प्रार्थना है कि इसकी दीवेक सामन या इसके निमित्त दीया जलाकर नहीं पढ़ें। खासकर होलासे लगाकर कार्तिककी पूणमासी तक ८ महीने दाव पर बहुत जाय गिरने से प्रसजोवा को बड़ी भारी हिंसा होता है। अगर रात्राको भी पढ़ना चाहें तो चंद्रमा की रोशनीमें पढ़ सकते हैं। वना प्रानापूर्वका जाप दिनके समय और रात्राको, मालासे जाप करनाही श्रष्ट है। जिन भाई वा बहनाका ये प्रानापूर्वी नित्यप्रति नियमसे जाप करने का इच्छा हो। वेभाई प्रकाशक को पोष्ट सर्व के टिकट भेज कर मंगवा लें।

प्रकाशक ।

(२) आना पूर्व्वी पढ़ने की रीति यानी समझ और शुद्ध
 स्पष्ट नवकार मंत्र जहां १ का अंक हो वहां एमो-
 अरिहन्ताणं पढ़ना। जहां पर २ का अंक हो, वहां एमो-
 सिद्धाणं पढ़ना। जहां ३ का अंक हो वहां एमो आयरि-
 याणं पढ़ना जहां ४ का अंक हो वहां एमो उवभा-
 याणं पढ़ना। जहां ५ का अंक हो वहां एमो लोएसत्व-
 साहणं पढ़ना इस माफिक जो १ से ५ तक कअंक
 आगे पीछे ऊपर नीचे आदि उनको ऊपर लिखे
 अनुसार पढ़ना। आना पूर्व्वी पढ़ने का फल :—
 आना पूर्व्वी जपे जो कोय, छः मासीत पको फल होय
 संदे हमन आयो न लगार, निर्मल मन जपो नवकार
 शुद्ध धरचे धर विवेक। दिन दिन प्रति जपै जो एक।
 हम आना पूर्व्वी जो भणे। पांच सौ सागर ने पाप को
 हणे। स्थिर मन से ध्यान जो धरे। ते संसार सो हलो
 तिरे। अशुभ कर्म के हरण को, मन्त्र बढो नवकार।

३ बाणीद्वादश अंगमें देखलियो तत्वमारा एक अक्षर
 नवकारका गुञ्ज जपे जो सार । ते नांघे शुभदेवका
 आदुषा अपरमणार । महामंत्र नवकार का पढ़ो
 अथ यज्ञ वीर । गुञ्जपाठ जिसने जपे, मनमें धर
 कर धर । वीघन हटे संकटवटे, वसे स्वर्ग विमल
 कोड़ा कोड़ी तिरगये, गणधर कियो वरणा । रुख
 कारण भवियण मुरो नित नवकारी, जिनशामन
 आगमचौदापूरवसारो णसंभ हिमाकहत नलामें
 पारो, सुरतत्वमन नितत नित्त फलदातारो । इस
 में रव्यं जहो नित्यप्रति-जपे तो दुःख दग्धिन ही होय
 नवकारमंत्र जापमाला में करनेसे आनापूर्वी
 से जापका फल बहुतही ज्यादा है हरफ आगे पीछे
 होनेसे इसमें मनस्थिर रहता है और १८टिमें ५ आना-
 पूर्वीका जाप होसका है लेकिन शास्त्री भ. पा. के पढ़ने
 वगैरे नवकार मंत्रादिहम लोग कोई सा पाठभी गुञ्ज

४ स्पष्ट नहीं पढ़ सकते हैं और सम्यक् को प्राप्त भी
 अपनी आँखों से श्री जैन धर्म के शास्त्रों की सब धार्य-
 क्रियाओं पर भिन्न नहीं हो सकती है। अफसोसदायक यह
 अफसोस है कि वर्तमान हमारे भाई वहन हिन्दी
 भाषा की वही नहीं पढ़ाते हैं। (विद्याकाण्डावली)

विद्या धर्म उक्त । वृक्ष जगत् में सुखी मराल
 लज्जन पदार । प्रलय प्राप्ति काय न आवेलुट्टी
 होलुट्टनहार । देव । मृत्यु नहीं कोष करसका है
 विद्या धर्म का जगत् नहीं । नहीं कोई चोरी करसका है
 मयति लेसक, नाहीं । विद्या धर्म ने जीवात्मा को कर
 देसोत्तर प्रभुता दी सभय करसके विरा । शेष अवधि
 शिव सुखदाई देसोत्तर मयन जगत् में धीर जाई
 नहीं मिलता प्रसक्त गये । विद्या ० संस्कृत विद्या ही इस
 जगत् में सब काम का हलती है इसको मूर्ती मानि पढ़ने
 से सब विद्या आजाती है जीवात्मा को मातृपिता

୧	୨	୩	୪	୫
୨	୧	୩	୪	୫
୧	୩	୨	୪	୫
୩	୧	୨	୪	୫
୨	୩	୧	୪	୫
୩	୨	୧	୪	୫

୧	୨	୩	୪	୫
୬	୭	୮	୯	୧୦
୧୧	୧୨	୧୩	୧୪	୧୫
୧୬	୧୭	୧୮	୧୯	୨୦
୨୧	୨୨	୨୩	୨୪	୨୫
୨୬	୨୭	୨୮	୨୯	୩୦

୧	୩	୪	୨	୫
୩	୧	୪	୨	୫
୧	୪	୩	୨	୫
୪	୧	୩	୨	୫
୩	୪	୧	୨	୫
୪	୩	୧	୨	୫

୨	୩	୪	୧	୫
୩	୨	୪	୧	୫
୨	୪	୩	୧	୫
୪	୨	୩	୧	୫
୩	୪	୨	୧	୫
୪	୩	୨	୧	୫

୧	୨	୩	୪	୫
୨	୧	୩	୪	୫
୧	୩	୨	୪	୫
୩	୧	୨	୪	୫
୨	୩	୧	୪	୫
୩	୨	୧	୪	୫

* ୧୦ * ୧୦

୧	୨	୫	୩	୪
୨	୧	୫	୩	୪
୧	୫	୨	୩	୪
୫	୧	୨	୩	୪
୨	୫	୧	୩	୪
୫	୨	୧	୩	୪

୧୮୯୧୦:୧୨୩* ୧୧ *୧୨୩୪୫୬୭୮୯୧୦*

୧	୩	୫	୭	୯
୩	୧	୫	୭	୯
୧	୫	୩	୭	୯
୫	୧	୩	୭	୯
୩	୫	୧	୭	୯
୫	୩	୧	୭	୯

୧	୩	୫	୭	୮
୩	୧	୫	୭	୮
୧	୫	୩	୭	୮
୫	୧	୩	୭	୮
୩	୫	୧	୭	୮
୫	୩	୧	୭	୮

୧	୨	୩	୪	୫
୬	୭	୮	୯	୧୦
୧୧	୧୨	୧୩	୧୪	୧୫
୧୬	୧୭	୧୮	୧୯	୨୦
୨୧	୨୨	୨୩	୨୪	୨୫
୨୬	୨୭	୨୮	୨୯	୩୦

୧	୨	୫	୮	୩
୨	୧	୫	୮	୩
୧	୫	୨	୮	୩
୫	୧	୨	୮	୩
୨	୫	୧	୮	୩
୫	୨	୧	୮	୩

୧	୪	୫	୩	୨
୪	୧	୩	୨	୫
୩	୫	୨	୪	୧
୨	୩	୧	୫	୪
୫	୨	୪	୧	୩
୩	୨	୫	୪	୧
୫	୩	୧	୨	୪
୨	୪	୩	୫	୧

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

* ୧୦ *				
୧	୩	୪	୫	୬
୩	୧	୪	୫	୬
୧	୪	୩	୫	୬
୪	୧	୩	୫	୬
୩	୪	୧	୫	୬
୪	୩	୧	୫	୬
* ୧୦ *				

* ୧୫ *

୧	୩	୫	୮	୨
୩	୧	୫	୮	୨
୧	୫	୩	୮	୨
୫	୧	୩	୮	୨
୩	୫	୧	୮	୨
୫	୩	୧	୮	୨

୧	୪	୫	୩	୨
୪	୧	୫	୩	୨
୧	୫	୪	୩	୨
୫	୧	୪	୩	୨
୪	୫	୧	୩	୨
୫	୪	୧	୩	୨

* ୧୨୩୪୫:୬୭୮୯୧୦ * ୨୦ * ୧୨୩୪୫୬୭୮୯୧୦ *

୩	୪	୫	୬	୭
୪	୩	୫	୬	୭
୩	୫	୪	୬	୭
୫	୩	୪	୬	୭
୪	୫	୩	୬	୭
୫	୪	୩	୬	୭

* ୧୨୩୪୫୬୭୮୯୧୦:୧୨୩୪୫୬୭୮୯୧୦ *

୨	୩	୪	୫	୬
୩	୨	୪	୫	୬
୨	୪	୩	୫	୬
୪	୨	୩	୫	୬
୩	୪	୨	୫	୬
୪	୩	୨	୫	୬

2	3	4	8	9
3	2	4	8	9
2	4	3	8	9
4	2	3	8	9
3	4	2	8	9
4	3	2	8	9

2	8	4	3	8
8	2	4	3	8
2	4	8	3	8
4	2	8	3	8
8	4	2	3	8
4	8	2	3	8

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

रथयन्त्रोपे नही पढ़ाते हैं । उक्त प्र. लक्ष्मणकदुरमन है
 भातात्ता न कहानि है ताते सबजन पढ़ो पढ़ाओ
 विद्यादान करो सो न कर्मये ० विद्या ० ॥ सुविद्यादानं
 परमदानं प्रोक्तं ज्ञानसाधनम् । दोहेनृपतिपद और
 विद्या कब हुन न एक समान नृपति पूज्यनिजदेश
 न न पदमविद्य ॥ १ ॥ राजभोगधनसंपदा विपत
 ममपत न जाहिह कविद्याविपदा समयतजेन नरकी
 अहं परानारी न मातसम परधनधूल समान । सब
 जीयन क आयतननिनं संप्रंडित ज्ञानशदारासुत और
 लक्ष्मणो यपी पैमो यी व सप्रगदर्शनधर्मचित्त जगमें
 दुर्लभदोय ॥ प्रथम परवलोलक्ष्मणो उदयग्रस्तलों राज
 विन प्राप्त कलवाग न नभोनरक कालाजधर्मगहन्य
 तेव्य परधर्मगहन्यते प्रहाधर्मगहन्यतेश्चुयतोय
 स्तता न प्रधर्म कलनं नार सुधर्म करतनिर्वा
 धमपथ साधविना नरतिर्यव समान ॥ ७ ॥

अहिंसापराधर्मः यतो धर्मस्ततो जयः ।

नवकारमंत्र (महिमा ढाल) ।

२६ श्रीगुरु शिखा दत्त ह (सुन प्राणीरे) रुमर
 मंत्र नवकार(सीख सुनप्राणीरे)लोकोत्तम मंगल-
 महा (सुन प्राणीरे) अशरण जन आधार (सीख
 (सुन प्राणीरे)प्राकृत रूप अनादि है(सुनप्राणीरे)
 मित अक्षर पैतीस (सीख सुन प्राणीरे) पाप
 जाहिं सब जापतैं (सुन) भाषा गणधर ईश (सीख)
 मन पवित्र कर मन्त्र को(सुन) मुमरो शंका छोड़
 (सीख) वांछित वर पावै सही (सुन) शीलवन्त
 नर नारि (सीख) विषधर बाघन भय करै (सुन)
 विनशय दिघ्न अनेक(सीख)व्याधि विषम व्यंत-
 र भजै (सुन) विपति न व्यापै एक (सीख)कपि
 को शिखर समेदपै (सुन) मंत्र दियो मुनिराय
 (सीख) होय अमर नर शिववसो (सुन) धर
 चौथी प याय (सीख) कह्यो पद्मरुचि रुठने

(२०) (सुन) सुनी दैल के जीव (सीख) नर सुरवे ह ख
 मंज वै (सुन) भयो राव ह ग्रीव (सीख) दीनो
 मंच सुलोचना (सुन) विद्युध्री को जीव (सीख)
 गंगा देवी अवतरी (सुन) सर्प उसी थी सोय
 (सीख) चारुदत्त पे वणिक् ने (सुन) पायी
 वृष मभार (सीख) पर्वत ऊपर द्वागने (सुन)
 भये युगम सुरसार (सीख) नागनागनी कलतही
 (सुन) देखे पार्श्व चिन्मन्द (सीख) मंच देत
 तदही भये (सुन) दद्यावात धरणेन्द्र (सीख)
 चहते मे इधनी पंसी (सुन) खग कीनी उपकार
 (सीख) भव लङ्घिबे सीता भई (सुन) परमसती
 सुसार (सीख) उल्ल मंग सही दटो (सीख)
 चोर कंठ गत प्राण (सीख) मंच सिखायो सेठने
 [सुन) लहो सुरग सुखथान (सीख) चंपापुर में
 र चालिया (सुन) पोषे मन्त्र महान् (सीख) सेठ
 सु दर्शन अवतरो (सुन) पहिले भव निर्वाण (सीख)

(२८) मंच महातम की कथा (सुन) नाम सूचना यह
 (सीख) श्री पुण्यध्वज ग्रंथ में (सुन) व्योमसे
 सुन लेखी (सीख) सात व्यसन सेवत हठी (सुन)
 अधम अंजना चोर (सीख) शरधा करत मंच को
 (सुन) साक्षी विद्या जार (सीख) जोषक सेठ
 सम्बोधिया (सुन) पापाचारो स्वान (सीख) मंच
 प्रतापै पादयो (सुन) सुन्दर स्वर्ग विमान (सीख)
 भागे सीधे मोक्ष हैं (सुन) पञ्च साक्षी निरवार
 (सीख) तिनके नाम बखानतें (सुन) कोई न
 पावे पार [सीख) बैठन चलते सोवते (सुन)
 आदि अन्त लो धोर (सीख) इस अपराजित मंच
 को (सुन) मत बिसरोहो वोर (सीख) सकल
 लोक सब काल में (सुन) सर्वांगम में सार (सीख)
 भूधर कबहु न भूलये (सुन) मंच राज मनधार
 (सीख सुन प्राणीरे)

